7 मार्च 2014 को विज्ञान भवन , नई दिल्ली में 2011-12 के राष्ट्रीय शहरी पुरस्कारों और शहरों में अपशिष्ट जल के पुनः चक्रीकरण और पुनः प्रयोग पर राष्ट्रीय कार्यशाला पर आयोजित रिपोर्ट।

शहरी विकास मंत्रालय (एमओयूडी) ने राष्ट्रीय शहरी जल पुरस्कार 2011-12 और साथ में "अपशिष्ट जल पुनः चक्रीकरण और शहरों में पुनः प्रयोग " 'विषय पर एक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन, विज्ञान भवन, नई दिल्ली में 7 मार्च 2014 को किया।

2. राष्ट्रीय शहरी जल पुरस्कार (एनयूडब्ल्यूए) 2011-12 का सम्मान समारोह , देश भर में शहरी स्थानीय निकायों और जल बोर्ड द्वारा अनुकरणीय प्रथाओं की पहचान कराने के लिए आयोजित किया गया, जिससे नागरिकों को बेहतर सेवाओं के लिए मार्ग प्रशस्त हुआ। समारोह में पुरस्कार, डॉ. सुधीर कृष्णा, सचिव, एमओयूडी, (भारत सरकार) द्वारा विजेताओं को दिए गए।

3. कार्यशाला का उद्देश्य , भारत में शहरों और कस्बों में अपशिष्ट जल के पुनः उपयोग के प्रयासों को बढ़ावा देना था और नीति निर्माताओं , दाताओं, नागरिक समाज और अन्य लोगों के बीच अपशिष्ट जल की महत्ता के प्रति जागरूकता बढ़ाना था और विशेषकर उन शहरों में , जो स्वच्छता योजनाओं को विकसित कर रहे हैं , उन में अपशिष्ट जल पुनः चक्रीकरण और पुनः प्रयोग को बढ़ावा देना था।

4. डॉ अशोक सिंघवी , संयुक्त सचिव (यूडी), शहरी विकास मंत्रालय ने, पुरस्कार समारोह और कार्यशाला के लिए प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने एनयूडब्ल्यूए 2011-12 , जल पुनः चक्रीकरण और पुन: उपयोग की आवश्कता की , एक संक्षिप्त पृष्ठभूमि बताई , सीवरेज और सीवेज ट्रीटमेंट प्रणाली , 2013 पर दिशा निर्देशों के संशोधित और नवीनतम मैनुअल को भी इसमे शामिल किया गया और सेवा स्तर के मानक (एसएलबी) के तहत जल के पुनः चक्रीकरण व अपशिष्ट जल के पुन: उपयोग के लिए स्थापित मानक भी बताये।

5. राष्ट्रीय शहरी जल पुरस्कार (एनयूडब्ल्यूए) 2011-12

राष्ट्रीय शहरी जल पुरस्कार पर यह प्रस्तुति श्री श्रीनिवास चारी वेडाला , एएससीआई द्वारा बनायी गयी, जिसमे पुरस्कार श्रेणियों का वर्णन है और प्रत्येक श्रेणी में विजेताओं का एक सिंहावलोकन भी है। वर्ष 2011-12 के लिए चयनित पुरस्कार विजेताओं में आठ विजेता थे (एक संयुक्त विजेता सहित) और सात पुरस्कार श्रेणियों में एक "विशेष उल्लेख", जो इस प्रकार है:

राष्ट्रीय शहरी जल पुरस्कार पर यह प्रस्तुति श्री श्रीनिवास चारी वेडाला , एएससीआई द्वारा बनायी गयी , जिसमे पुरस्कार श्रेणियों का वर्णन है और प्रत्येक श्रेणी में विजेताओं का एक

सिंहावलोकन भी है। वर्ष 2011-12 के लिए चयनित पुरस्कार विजेताओं में आठ विजेता थे (एक संयुक्त विजेता सहित) और सात पुरस्कार श्रेणियों में एक "विशेष उल्लेख", जो इस प्रकार है:

प्रविष्टि का शीर्षक	संस्था का नाम	पुरस्कार
1. तकनीकी उत्कृष्टता		
उत्तराखंड में जल गुणवत्ता की निगरानी	उत्तराखंड जल संस्थान	विजेता
2. वित्तीय सुधार		
24 घंटे की सेवा के साथ पीपीपी पर वायरलेस डिजिटल मीटरिंग प्रणाली की स्थापना	ग्रेटर विशाल्खापट्टनम नगर निगम	विजेता
3. गरीबों को सेवायें		
भागीरथी टैप तक पहुंचना	कवर्धा नगर परिषद	विजेता
4. नागरिक सेवा और शासन		
बारिश के पानी का संग्रहण	बेंगलुरु जल आपूर्ती एवं सीवरेज बोर्ड	संयुक्त-विजेता
बेहरामपुर में नागरिकों के लिए जल-निकायों का पुनरुथान	बेहरामपुर नगर निगम और स्थानीय शासन नेटवर्क	
5. सार्वजनिक-निजी भागीदारी		
प्रचालन और रखरखाव की सेवाओं को ठेकेदारी पर देना	नवी मुंबई नगर निगम	विजेता
6. संचार रणनीति और जागरूकता सृजन		
एकीकृत शहरी स्वच्छता कार्यक्रम (आईयूएसपी)	शहरी प्रशासन और विकास विभाग (यूएडीडी) और नगर प्रबंधक एसोसिएशन (सीएमए) -मध्य प्रदेश	विजेता
7. शहरी स्वच्छता		
ग्वालियर में स्वर्णरेखा नदी का उन्नतीकरण	ग्वालियर नगर निगम	विजेता
डीलाइट भारत ई-शौचालय	एरम साईंटिफिक सोलूशंस (प्रा.) लिमिटेड	विशेष उल्लेख

6. **<u>अपशिष्ट जल के रिसाईकल और पुनः प्रयोग पर राष्ट्रीय कार्यशाला</u>**

जल रिसाइकिलिंग में अपशिष्ट जल को लाभकारी उद्देश्यों के लिए पुनः प्रयोग करना होता है जैसे कि , कृषि और भूभाग की सिंचाई , औद्योगिक प्रक्रियाएं, शौचालय के पानी की निकासी, और भू-जल बेसिन की भरपाई (भूजल पुनर्भरण)। जल रिसाइकिलिंग कई अनुप्रयोगों में इस्तेमाल से संसाधन और वित्तीय बचत प्रदान करता है और हर प्रकार की पानी की जरूरत प्रकार पूरा करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

जल का पुनः उपयोग तीन मौलिक कार्यों को पूरा करता है जैसे कि , i) अपशिष्ट जल को लाभकारी उद्देश्यों के लिए जल संसाधन के रूप में प्रयोग किया जाता है ii) अपशिष्ट कूड़ा करकट को नदियों, झीलों, आदि से दूर रखा जाता है जिस से सतह और भूमिगत जल का प्रदूषण कम होता है, और iii) यह जनता के स्वास्थ्य की सुरक्षा करता है।

सरकार, तकनीकी और औद्योगिक भागीदार , गहन जल कम्पनियों के प्रतिनिधि , जल के पुनः चक्रीकरण और फिर से उपयोग पर काम कर रहे हैं , सीआईआई और फिक्की आदि और देश भर से नागरिक समाज के सदस्यों सहित, सभी ने कार्यशाला में भाग लिया।

7 डॉ सुधीर कृष्णा, सचिव (शहरी विकास) ने श्री शिन्या एजिमा, मुख्य प्रतिनिधि, जेआईसीए, के साथ, सीवरेज व निकासी उपचार प्रणालियां 2013 ; पर संशोधित/नवीनतम मैनुअल जारी किया, जिसे तीन भागों में बनाया गया है पार्ट-क: इंजीनियरिंग , भाग-ख: संचालन एवं रखरखाव और पार्ट-ग प्रबंधन। मैनुअल की तैयारी का कार्य एमओयूडी द्वारा जापान अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एजेंसी (जेआईसीए) की सहायता से किया गया था। मैनुअल को "नियमावली और परामर्श" शीर्षक के अंतर्गत मंत्रालय की वेबसाइट पर अपलोड किया गया है।

8. सचिव (शहरी विकास) ने अपने प्रमुख भाषण में , जल आपूर्ति और सफाई व्यवस्था पर राष्ट्रीय पुरस्कार विजेताओं की प्रशंसा की और प्रभावी जल प्रबंधन की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाने और सेवा प्रदान करने में प्रभावशाली सुधार में उनके योगदान के लिए उनकी सराहना की। उन्होंने कहा कि पुरस्कारों में विभिन्न श्रेणियों में व्यापक स्तर पर अच्छे व्यवहार की विस्तृत श्रेणी को लिया गया है, जिसके परिणामस्वरूप बड़े पैमाने पर नागरिकों को सेवा प्रदान करने के स्तर की गुणवत्ता बढ़ गई है और शहरी भारत में जल प्रबंधन के तरीकों में , अभिनव, प्रेरणादायक और टिकाऊ मॉडल का प्रदर्शन हुआ है।

सचिव (शहरी विकास) ने अपशिष्ट जल के पुनः चक्रीकरण और उसे पुनः उपयोग करने के महत्व पर बल दिया और कहा कि एक वांछित डिग्री के बाद सीवेज की रीसाइक्लिंग और उसका फिर से उपयोग विभिन्न गैर-पीने योग्य उद्देश्यों के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उन्होंने इस बात पर भी पर बल दिया कि संशोधित सीवेज का पुन उपयोग चरणबद्ध तरीके से

अनिवार्य किया जाना चाहिए और कहा कि नगर उपनियमों में कानून लाने या संशोधन की भी जरूरत है। इसके साथ ही उन्होंने निजी क्षेत्र की भागीदारी को साफ-सफाई और अपशिष्ट पुनरावृत्ति व पुनः प्रयोग की चुनोतियों के प्रति उत्तरदायी होनेका के लिए निवेदन व और प्रोत्साहित किया और निजी क्षेत्र के प्रतिनिधियों को भारत के 'कस्बों और शहरों के लिए स्थायी जल उपलब्धता के प्रबंधन समाधान के लिए इस चुनौती को स्वीकार करने के लिए आमंत्रित किया। सार्वजनिक-निजी भागीदारी सेवाओं की श्रेणी में , चुनिंदा सेवाओं को बाहर के स्रोतों से करवाने से लेकर निजी क्षेत्र की भागीदारी को बुनियादी ढांचे के निर्माण में निवेश को , शामिल किया जा सकता है।

9. सुश्री नंदिता मिश्रा, निदेशक (पीएचई) ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा।

10. भोजनावकाश के बाद, एक संवाद सत्र श्री ए.एस. भाल, आर्थिक सलाहकार, शहरी विकास मंत्रालय की अध्यक्षता में किया गया और अपशिष्ट जल के पुनः चक्रीकरण और उसके फिर से उपयोग के मुद्दे पर ध्यान केंद्रित किया गया। डॉ एम. धिनाध्यालन, संयुक्त सलाहकार (पीएचईई) सीपीएचईईओ ने कार्यशाला के संदर्भ को विस्तार से बताया साथ ही विचार विमर्श की संरचना भी बताई। उन्होंने देश में उस जगह शहरी स्वच्छता की प्रमुख चुनौतियों पर जोर दिया, जहां देश में संपूर्ण स्वच्छता के लिए उच्चाधिकार विशेषज्ञ समिति (एच पीईसी) के अनुसार भारी निवेश के अनुमान की जरूरत है। उन्होंने आगे इस बात पर बल दिया कि कई अपशिष्ट जल और पुनः चक्रीकरण परियोजनाओं को जेएनएनयूआरएम के तहत प्रोत्साहित किया जा रहा है और उद्योगों को एक बड़ा उपभोक्ता होने के नाते पुनः चक्रीकरण पानी का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। एक प्रमुख चुनौती यह है कि जो धनराशि केन्द्र और राज्य सरकारों को आवंटित की जाती है वह 100% स्वच्छता कवरेज प्रदान करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं, और पुनः चक्रीकरण उस लागत को वसूल करने के लिए अवसर प्रदान करता है।

11. कार्यशाला में मुख्य रूप से दो क्षेत्रों पर विचार विमर्श किया गया:

(i) सफल अपशिष्ट जल के पुनःचक्रीकरण और फिर से उपयोग के लिए भारतीय अनुभव और संचालक , नीति और प्रोत्साहन को निम्न प्रस्तुतियों के द्वारा बताया गया:

क. श्री सुकेतु शाह, एमडी, ओक्सिव पर्यावरण प्रबंधन प्रा. लिमिटेड और सदस्य (फिक्की) द्वारा अपशिष्ट जल पुनः चक्रीकरण और पुन: उपयोग पर - भारतीय अनुभव, नीतियां, संचालक

ख. श्री आशीष शर्मा, एमडी, महाजेनको, द्वारा नागपुर में पुनः चक्रीकरण और पुन: उपयोग की पहल पर

ग. डॉ. सब्यसाची नायक, उप निदेशक, सीआईआई-त्रिवेणी जल संस्थान द्वारा अपशिष्ट जल के पुनः चक्रीकरण के उपयोग पर उद्योग-जगत का परिप्रेक्ष्य

घ. डॉ. उदय केलकर, निदेशक, एनजेएस इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड, द्वारा भारत विशिष्ट पुनः चक्रीकरण और पुनः प्रयोग पर दस्तावेज - क्या इसकी जरूरत है?

(ii) आर्थिक मूल्यांकन और जल के पुन: उपयोग की परियोजनाओं के वित्तपोषण पर निम्न प्रस्तुतियाँ दी गईं:

क. श्री जोसफ रविकुमार, सुश्री शुभ्रा जैन और श्री राजीव रमन, डब्लूएसपी - एसए द्वारा अपशिष्ट जल के आर्थिक मूल्यांकन पर।

ख. सुश्री एस. मधुमती, आयुक्त, तूतीकोरिन नगर निगम द्वारा तूतीकोरिन के लिए अपशिष्ट जल पुनः चक्रीकरण और पुन:उपयोग की पीपीपी पर।

ग. श्री विद्याधर सोनटके, निदेशक, एनजेएसईआई द्वारा कोल्हापुर नगर निगम में व्यवहार्यता अनुदान अंतर पर।

12. उपरोक्त विशेषज्ञों द्वारा सभी पावर प्वाइंट प्रस्तुतीकरणों को एमओयूडी की वेबसाइट पर अपलोड किया गया है। कार्यशाला, श्री ए. एस. भाल, आर्थिक सलाहकार द्वारा समापन भाषण के साथ समाप्त हुई, उन्होने सभी वक्ताओं को बधाई दी, और अपशिष्ट जल के पुनः चक्रीकरण और पुनः प्रयोग के समाधानों के कार्यान्वयन की आवश्यकता को दोहराया , साथ ही इस कार्य में सरकार द्वारा निजी क्षेत्र के सहयोग से, सहयोगात्मक प्रयासों की भी सराहना की।

******